कार्ल मार्क्स का वर्ग–संघर्ष का सिद्धान्त

डॉ0 ज्योत्स्ना गौतम,

एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, नवयुग कन्या महाविद्यालय, लखनऊ, उ0प्र0

शोध सारांश

प्राकृतिक समानता के साथ ही असमानता का तत्व भी निर्विवादित रूप से सत्य है, यह प्राकृतिक असमानता जब समाज जनित असमानता से सम्बद्ध हो जाती है, तब समाज में वर्गों का उदय होता है, जिनके मध्य अपने–अपने अस्तित्व एवं हितों की रक्षा हेतु समाज में निरन्तर संघर्ष चलता रहता है। मार्क्स द्वारा इस वर्ग संघर्ष का व्यवस्थित विश्लेषण कर उसे वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किया गया है। मार्क्स ने वर्ग संघर्ष को समाज में होने वाले परिवर्तनों का कारक माना है। मार्क्स का मानना है कि समाज में दो प्रकार के वर्गों का अस्तित्व विद्यमान है, शोषक और शोषित, वह शोषित समाज को शोषक वर्ग के शोषण से मुक्ति के लिए विश्व के श्रमिक वर्ग की एकता पर बल देता है, ताकि पूँजीपति व्यवस्था के विरुद्ध क्रान्ति सम्भव हो, मार्क्स का लक्ष्य इस क्रान्ति द्वारा वर्गविहीन एवं राज्यविहीन समाज की स्थापना करना है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उसने अपनी पुस्तक 'कम्युनिस्ट मैनीफेस्टो' में सर्वहारा वर्ग के समक्ष एक कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की है, जिसके माध्यम से पूँजीवादी वर्ग पर श्रमिक वर्ग की अन्तिम विजय को सुनिश्चित करने का आश्वासन दिया गया है।

मुख्य शब्द – *मार्क्स, पूँजीपति, श्रमिक, वर्ग, संघर्ष, उत्पादन*

जर्मन दार्शनिक, इतिहासकार, अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री, राजनीतिक सिद्धान्तकार, पत्रकार, सम्पादक और वैज्ञानिक समाजवाद के प्रणेता कार्ल हेनरिख मार्क्स का जन्म 5 मई सन् 1818 को जर्मनी के राइन प्रान्त के टियर नगर में एक सम्पन्न यहूदी परिवार में हुआ था। मार्क्स की शिक्षा लीव विश्वविद्यालय, बर्लिन विश्वविद्यालय एवं जेना विश्वविद्यालय में सम्पन्न हुई। ये देशद्रोही नीतियों एवं निष्कासन के उपरान्त समय–समय पर स्थान परिवर्तित करते हुए उग्र सुधारवादियों के सम्पर्क में आये। मार्क्स हीगल के दर्शन के अतिरिक्त तत्कालीन आर्थिक परिस्थितियों, ब्रिटिश विचारकों, फ्रेंच समाजवादियों से प्रभावित थे। इन्होंने अनेक लेख संस्मरण, गुप्त पत्र, संवाद, निबन्ध भी लिखे, किन्तु सरकार विरोधी निबन्ध लिखने के लिए इन्हें पेरिस को छोड़ना पड़ा, तत्पश्चात् ये ब्रेसेल्स में साम्यवादी लीग के सदस्य बन गये। ऐंजिल्स से प्रभावित होने के कारण मार्क्स ने इनके साथ मिलकर कम्युनिस्ट मैनीफेस्टो की रचना की और वर्ग संघर्ष के सिद्धान्त से इतिहास की व्याख्या कर यूरोपीय साम्यवादी दल को क्रान्ति के लिए प्रेरित किया। सन् 1848 में मार्क्स ने बौद्धिक क्रान्ति पर बल देते हुए जर्मनी में एक क्रान्तिकारी पत्र 'न्यूरीनिश टाइम्स' का प्रकाशन प्रारम्भ किया। राजद्रोह के आरोप में इन्हें पुनः देश से निष्कासित किया गया, फलतः ये लंदन चले गये, जहाँ इन्होंने जीवन के शेष वर्ष व्यतीत किये। दास कैपिटल, कम्युनिस्ट मैनीफेस्टो, क्लास स्ट्रगल इन फ्रांस इनके द्वारा रचित प्रमुख पुस्तकें हैं।

मार्क्स द्वारा प्रतिपादित समाजवाद व्यवस्थित रूप से प्रतिपादित एक व्यवहारिक विचारदर्शन है जो इतिहास निहित अध्ययन पर आधारित है। मार्क्स का विश्वास है कि आर्थिक तत्व इतिहास के विकास का आधार है। मार्क्स ने श्रमजीवी वर्ग की खोज करके उसे समाज में अत्यधिक महत्ता प्रदान की, इन्होंने पूंजीवाद के दोषों का उल्लेख कर, इसे समाप्त कर वर्गविहीन समाज की स्थापना के लिए पूर्ण प्रक्रिया रचित कर विश्व के समक्ष रखा। इस प्रकार मार्क्स द्वारा समाजवाद को वैज्ञानिक रूप में परिणित किया गया। मार्क्स ने समाजवादी व्यवस्था की स्थापना के लिए 'विश्व के मजदूरों एक हो जाओ अपनी बेड़ियों और दासता के सिवाय तुम कुछ नहीं खोओगे, एक नई दुनिया प्राप्त करोगे' का नारा लगाकर क्रान्ति का आह्वान किया। इस प्रकार मार्क्स के विचारों ने समाजवाद को एक नये दर्शन, आन्दोलन तथा कार्यक्रम का रूप प्रदान किया, उसके सिद्धान्तों की क्रमबद्धता ने समाजवाद का वैज्ञानिक रूप से विश्लेषण किया। मार्क्स की विचारधारा के मुख्य स्तम्भ द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद, इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या, वर्ग संघर्ष का सिद्धान्त, अतिरिक्त मूल्य का सिद्धान्त के आधार पर अपने दर्शन का भवन निर्मित किया है। मार्क्स का सम्पूर्ण दर्शन द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के विचाररूपी स्तम्भ पर आधारित है। मार्क्स ने इस सिद्धान्त के द्वारा समाजवाद को वैज्ञानिक निश्चयात्मकता प्रदान की और उसका प्रयोग वैज्ञानिक ऐतिहासिक तथा सामाजिक विकास की व्याख्या करने में किया तथा अतिरिक्त मूल्य का सिद्धान्त यह बताता है कि पूंजीवादी व्यवस्था में पूंजीपतियों द्वारा श्रमिकों का किस प्रकार शोषण किया जाता है।

वर्ग संघर्ष का सिद्धान्त कार्ल मार्क्स का एक प्रमुख सिद्धान्त है, यह ऐतिहासिक भौतिकवाद का पूरक है, यह समाज में होने वाले परिवर्तनों की प्रक्रिया की ओर इंगित करता है। यद्यपि वर्ग विभाजन के सिद्धान्त के तत्व प्लेटो, अरस्तू, सन्त साइमन आदि के अनुयायियों के विचारों में द्रष्टव्य है किन्तु मार्क्स द्वारा ऐतिहासिक दृष्टिकोण अपनाकर उत्पादन क्रिया पर आश्रित वर्गों के समस्त इतिहास की व्याख्या का विस्तृत प्रयास किया है। मार्क्स समाज में उत्पादन और वितरण पर आधारित दो वर्गों के अस्तित्व को स्वीकारता है, जो अपने हितों के टकराव के कारण अनवरत संघर्षरत रहते हैं, इन्हीं संघर्षों द्वारा नये समाजों की सृष्टि हुई है। मार्क्स का मत है कि समय के साथ—साथ इनकी प्रकृति में परिवर्तन अवश्य होता रहा है, किन्तु समाज में उत्पादन के संसाधनों पर एक वर्ग का ही प्रभुत्व रहा है, जिसे पूंजीपति वर्ग कहा जाता है, दूसरा वर्ग श्रम से उत्पादन करके, पूंजीपति पर आश्रित रहकर जीवनयापन करने वाले कृषक अथवा श्रमजीवी वर्ग है।

मार्क्स का मत है कि पूंजीपति बिना श्रम किये श्रमिक वर्ग के शोषण से लाभार्जित करता है और श्रमिक वर्ग अति परिश्रम के उपरान्त भी जीविकोपार्जन की प्राथमिक आवश्यकतायें पूरी करने के लिए मृगमरीचिका के समान स्थिति में अपने आपको पाता है एवं अनवरत शोषित होता रहता है। इस दृष्टि से पूंजीपति को शोषक वर्ग और श्रमिक को शोषित वर्ग कहते हैं। पूंजीपति उत्पादन के साधनों पर प्रभुत्व रखकर जीवनयापन करता है और श्रमिक अपने परिश्रम से श्रम का विक्रय करके अपना जीवनयापन करता है। दोनों वर्ग अन्योन्याश्रित होने पर भी दोनों के हितों में द्वन्द्व रहता है, क्योंकि पूंजीपति अत्यधिक लाभार्जन हेतु श्रमिकों को न्यूनतम पारिश्रमिक देने की इच्छा रखता है। श्रमिक जो अत्यधिक श्रम करता है, वह अधिक से अधिक पारिश्रमिक की इच्छा रखता है, दोनों वर्गों में संघर्ष की उत्पत्ति का कारण परस्पर हितों का विरोध है किन्तु यह संघर्ष की स्थिति श्रमिकों को ही निराशा देती है क्योंकि श्रम नाशवान है उसे संग्रहित नहीं किया जा सकता है, इसलिए श्रमिक की यह विवशता पूंजीपति को शोषण का खुला आमन्त्रण देती है,

इसे पूंजीपति के हाथ में शोषण का एक अस्त्र कहा जा सकता है। मार्क्स वर्ग संघर्ष की इसी धारणा पर पूंजीवाद की समाप्ति को अवश्यम्भावी मानता है। मार्क्स का विचार है कि शोषण के विरुद्ध चेतना उदित होने पर श्रमिक पूंजीपति के विरुद्ध क्रान्ति करता है। पूंजीपति क्रान्ति के दमन के लिए सतत प्रयासरत रहता है। मार्क्स का मत है कि पूंजीवाद में ही उसके विनाश के तत्व समाहित हैं, क्योंकि पूंजीवादी व्यवस्था में उत्पादन व्यक्तिगत हित के लिए किया जाता है। इससे मॉग और उत्पादित माल में समन्वय नहीं हो पाता, पूंजीपति अधिक उत्पादन में विश्वास करता है, इससे पूंजी कम व्यक्ति के पास समाहित होकर रह जाती है और श्रमिकों की संख्या निरन्तर बढ़ती रहती है। इससे श्रमजीवी वर्ग को पूंजीपति अपने विनाश की शक्ति हस्तगत करता है, मार्क्स का विचार है कि जब उत्पादन श्रमिक वर्ग की खरीदने की शक्ति से अधिक हो जाता है तब लाभ की कोई आशा नहीं रहती, ऐसे पर्यावरण में पूंजीपति उत्पादित माल को नष्ट करके माल की कृत्रिम कमी की परिस्थिति पैदा करता है। इससे श्रमिकों और सामान्य जनता में अत्यन्त नैराश्य का भाव जाग्रत होता है। पूँजीवादी व्यवस्था श्रमिकों को हमेशा अनभिज्ञ एवं कठिनाइयों में रहने की स्थिति में रखना चाहती है, जिससे वह आत्मनिर्भर न हो पाये, इससे श्रमिकों में रोष बढ़ता है।

पूँजीवादी व्यवस्था में श्रमिक मात्र एक मशीन बनकर रह जाता है। इससे उसकी सृजन शक्ति को क्षति पहुॅचती है, इसीलिए उसमें चेतना का उदय होता है। पूॅजीपति अपने आर्थिक हितों के कारण उद्योगों के केन्द्रीकरण में विश्वास करते हैं, यह स्थिति श्रमिकों को एक स्थान पर केन्द्रित होने का अवसर देती हैं, चूॅकि सभी की पीड़ा समान है, इसीलिए उनमें निरन्तर वर्गीय चेतना जाग्रत होती है और वे एकत्रित होकर अपना आक्रोश व्यक्त करने के लिए प्रयत्नशील होते हैं, इससे उनमें एकता उत्पन्न होती है। इसी कारण वे पूॅजीपतियों के साथ संघर्ष में सफल हो सकते हैं। पूॅजीवादी व्यवस्था में उत्पादन बढ़ने के कारण बड़े बाजारों की आवश्यकता पड़ती है, जिसके लिए यातायात के साधनों का विकास करना आवश्यक हो जाता है। इस विकास के कारण श्रमिक अन्य स्थानों के श्रमिकों से सम्पर्क का लाभ उठाते हैं, ऐसी अवस्था में राज्य की सत्ता को पूॅजीपति प्रभावित कर अपने हित में सत्ता का प्रयोग करते हैं, जैसे– विदेशों से कच्चे माल की आवश्यकता की पूर्ति, उत्पादित माल के लिए विदेशों में बाजार ढूॅढना, पूॅजी को व्यवसाय तथा उद्योग में न्यस्त करने के लिए, वैदेशिक क्षेत्रों में एकाधिकार की आवश्यकता आदि। यह सब बिना राजसत्ता के सहयोग के सम्भव नहीं है, ऐसी व्यवस्था उपनिवेशवाद तथा साम्राज्यवाद के विकसित होने में सहायक होती है, पूॅजीपतियों का शोषण उपनिवेश में लगे उद्योगों में भी जारी रहता है। इससे पूॅजीवाद का स्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय या विश्वव्यापी हो जाता है, श्रमिकों के आपसी सम्पर्क में आने के कारण राष्ट्रीय श्रमिक आन्दोलन अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप में परिवर्तित हो जाता है तथा पूॅजीवाद का अस्तित्व इस आन्दोलन के समक्ष स्थायी नहीं रह पाता है। मार्क्स का मत है कि विश्व के सभी श्रमिक पूॅजीवादी व्यवस्था के विरुद्ध एक अन्तर्राष्ट्रीय क्रान्ति करेंगे, क्योंकि श्रमिकों की संख्या पूॅजीपतियों की संख्या से अधिक होने के कारण श्रमिक वर्ग विजित होगा। मार्क्स के अनुसार इस संघर्ष का अनिवार्य परिणाम पूॅजीवाद का विनाश और सर्वहारा वर्ग की विजय के रूप में होगा। मार्क्स का विश्वास था कि इस संघर्ष के उपरान्त श्रमिकों का अधिनायकत्व होगा, यह तब तक रहेगा जब तक पूॅजीवाद के अवशेष नष्ट नहीं हो जाते और उत्पादन के साधनों पर श्रमिक वर्ग का सामूहिक स्वामित्व स्थापित नहीं हो जाता, तदुपरान्त वर्गविहीन, राज्यविहीन समाज की स्थापना होगी।

मार्क्स और ऐंजिल्स ने कम्युनिस्ट मैनीफेस्टो में पूँजीपति वर्ग एवं श्रमिक वर्ग के मध्य 19वीं सदी के वर्ग संघर्ष को समझाने का प्रयास किया है तथा सर्वहारा वर्ग के समक्ष एक कार्यक्रम की रूपरेखा के माध्यम से पूँजीवादी वर्ग पर अन्तिम विजय को सुनिश्चित करने का आश्वासन दिया है, जिसके माध्यम से श्रमिक अपनी सम्भावित श्रेष्ठता को वास्तविक श्रेष्ठता में परिवर्तित कर सकते हैं और स्वतः प्रेरित आर्थिक संघर्ष को नियोजित राजनीतिक संघर्ष में परिवर्तित करने के लिए अपने आपको योग्य बना सकते हैं तथा पूँजीवादी वर्ग पर अपना आधिपत्य स्थापित कर सकते हैं।

मार्क्स के अनुसार श्रमिक वर्ग का लक्ष्य अपने आपको शासक वर्ग के पद पर स्थापित करना होना चाहिए। इस लक्ष्य हेतु श्रमिक वर्ग को अपने आपको एक पीड़ित वर्ग के रूप में संगठित करना चाहिए। मार्क्स का मत है कि प्रत्येक देश में श्रमिकों को प्रजातन्त्र के विरुद्ध संघर्ष में सफलता के लिए स्वयं को शासक वर्ग की स्थिति में पहुँचने के लिए एक राजनीतिक दल के रूप में संगठित किया जाना चाहिए और चुनावी प्रणाली द्वारा व्यवस्थापिका में बहुमत प्राप्ति का प्रयास करना चाहिए। यदि शासक वर्ग सैन्यशक्ति के आधार पर बहुमत प्राप्त सर्वहारा वर्ग को राजनीतिक नियन्त्रण का न्यायोचित अधिकार से वंचित करने का प्रयास करे तो सर्वहारा वर्ग को अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु शक्ति प्रयोग के अवलम्ब में संकोच नहीं करना चाहिए। अपनी राजनीतिक सर्वोच्चता की सुरक्षा के उपरान्त श्रमिकों को पूँजी के सामाजीकरण की ओर उन्मुख होना चाहिए, यह प्रक्रिया क्रमिक होगी, इस प्रक्रिया के अन्तर्गत पूँजीवादी राज्यों में मान्यता प्राप्त संरक्षित सम्पत्ति के अधिकारों तथा उत्पादन पर धीरे–धीरे नियन्त्रण करना होगा। इस हेतु सभी राज्यों में समान उपाय सफल नहीं हो सकते हैं। राज्य पर श्रमिकों का आधिपत्य होने पर ही क्रमिक सुधार का कार्यक्रम आरम्भ होगा। मार्क्स नीति के सम्बन्ध में सैद्धान्तिक कथन देने के विरुद्ध था, उसने कहा, दर्जनों कार्यक्रम की अपेक्षा यथार्थ आन्दोलन का एक कदम कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है।

मार्क्स के अनुसार उत्पादन की आधुनिक शक्तियों और पूँजीपतियों की उत्पादन शक्तियों के विरोध के परिणामस्वरूप ही समाजवादी क्रान्ति हो सकती है। मार्क्स के अनुसार राजसत्ता प्राप्ति के साधन और समय में भिन्नता हो सकती है, मार्क्स ने संगठित हिंसा का समर्थन उस स्थिति में किया जब समाजवादी हिंसात्मक रूप से राजसत्ता प्राप्त करने में सक्षम हो, वह अनुकूल स्थिति तथा सफलता की पूर्ण आशा में ही सशस्त्र क्रान्ति का समर्थक था। मार्क्स ने समय से पूर्व क्रान्ति तथा प्रतिकूल परिस्थिति में समाजवादी व्यवस्था की स्थापना का विरोध किया, वह श्रमिकों के राज्य पर प्रभुत्व एवं सर्वहारा वर्ग के वर्गीय अधिनायकत्व स्थापित करने का पक्षधर है, क्योंकि उनका मत था कि अन्त में राज्य का लोप हो जायेगा क्योंकि समाजवादी लक्ष्य की प्राप्ति के उपरान्त उसकी सत्ता एवं शक्ति का कोई महत्त्व नहीं रहेगा।

मार्क्स का कार्यक्रम विकासवादी और क्रान्तिकारी दोनों है। विकासवादी इस रूप में है कि मार्क्स मानता है कि प्रजातान्त्रिक देशों में श्रमिक शान्तिपूर्ण उपायों से अपने लक्ष्यों की प्राप्ति कर सकते हैं एवं क्रान्तिकारी इस रूप में है कि मार्क्स वर्तमान व्यवस्था को समाप्त कर नवीन व्यवस्था को प्रस्थापित करने के लिए हिंसा और क्रान्ति का समर्थन करता है। दूसरे वह बलपूर्वक यह विचार स्थापित करता है कि पूँजी और श्रम के हितों में निरन्तर विरोध है तथा वर्ग संघर्ष स्थायी ऐतिहासिक आवश्यकता है जिसकी पुष्टि कम्युनिस्ट मैनीफेस्टो से होती है।

मार्क्स के वर्ग संघर्ष के सिद्धान्त विश्लेषण के पश्चात निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मार्क्स का यह सिद्धान्त हिंसात्मक क्रान्ति पर बल देता है। यह सहयोग की अपेक्षा विरोध का

सिद्धान्त है जबकि समाज सहयोग की भावना पर आधारित है। यह सिद्धान्त श्रमिकों के मन में पूँजीपतियों के प्रति वैमनस्य का भाव उत्पन्न करता है जिससे कि श्रमिक वर्ग पूँजीपतियों के विरुद्ध क्रान्ति कर सके। यह सिद्धान्त मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण पर बल देता है तथा श्रमिकों को पूँजीपति वर्ग के विरुद्ध संगठन बनाने के लिए प्रेरित करता है। यह सिद्धान्त वर्ग संघर्ष पर आवश्यकता से अधिक बल देता है जबकि उसकी भविष्यवाणियॉं असत्य रही हैं, औद्योगिक केन्द्र रहे इंग्लैण्ड में कोई क्रान्ति नहीं हुई, क्योंकि पूँजीपतियों द्वारा समयानुसार स्वयं को परिवर्तित किया गया। मार्क्स का मत कि सर्वहारा वर्ग एक राजनीतिक दल के रूप में संगठित होकर पूँजीवाद को समाप्त कर वर्गविहीन समाज की स्थापना करेगा, काल्पनिक ही सिद्ध हुआ है, वर्तमान समय में पूँजीवाद का विनाश असम्भव ही प्रतीत होता है। मार्क्स का यह विचार कि क्रान्ति श्रमिक वर्ग द्वारा प्रारम्भ की जाती है वह इतिहास में कहीं प्रमाणिक नहीं है, अपितु क्रान्ति का नेतृत्व बुद्धिजीवी वर्ग द्वारा किया जाता है।

अन्त में कहा जा सकता है कि मार्क्स द्वारा अपने सिद्धान्त को विज्ञान का स्वरूप प्रदान कर सर्वहारा वर्ग को शासित से शासक बनने की प्रेरणा दी, उनके विचार को विश्व के बड़े भाग पर कम्प्युनिस्ट विचार व्यवस्था के शासन और विचार के रूप में देखा जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. Johari J.C., Principles of Modern Political Science, Sterling Publisher & Pvt. Ltd., Greater Noida, 2018
2. Mahajan Dr. V.D., Political Theory (Principles of Political Science), S. Chand & Company Pvt. Ltd., New Delhi, 2016
3. Singh Subhibir, History of Political Thought, Rastogi Publication, Meerut, 2017
4. कपूर अनूप चंद, मिश्र कृष्णकान्त, राजनीति विज्ञान के सिद्धान्त, एस0 चन्द एण्ड कम्पनी लि0, नई दिल्ली, 2001
5. गाबा ओ0पी0, पाश्चात्य राजनीतिक विचारक, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा, 2011
6. पंत अम्बादत्त, गुप्ता मदन गोपाल, जैन हरीमोहन, राजनीतिशास्त्र के आधार, सेण्ट्रल पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद, 2004
7. सेवाइन जी0एच0 (अनु0), गुप्त विश्वप्रकाश, एस0 चन्द एण्ड कम्पनी लि0, नई दिल्ली, 1977